AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Fine Arts

“शतपथ ब्राह्मण में संवत्सर रूप प्रजापति”

अर्चना भार्गव
सह आचार्य एसंस्कृत
सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालयए अजमेर
;राजस्थानद्ध

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER / ARTICLE, HEREBY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT/ OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE/UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION. FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE)

समस्त जड़—चेतनात्मक पदार्थो की उत्पत्ति तथा निर्मिति को ‘सृष्टि’ कहते हैं। इन पदार्थो की उत्पत्ति एवं स्थिति के लिए “काल” एक महत्त्वपूर्ण इकाई है। यह काल एक अत्यन्त सूक्ष्म और विलक्षण तत्व है जो कि असंख्य परमाणुओं के रूप में निरन्तर विद्यमान रहता है। अथर्ववेद में इसे “अश्व” की भांति गतिशील बताया गया है — “कालो अश्वो वहति सप्तरश्मिः”।[1]दार्शनिक दृष्टि से काल की व्यापकता, महत्ता इयत्ता को स्पष्ट करने के लिए शतपथ ब्राह्मण में “अरून्धती न्याय” का अनुसरण करते हुए स्थूल से सूक्ष्म को स्पष्ट करने की प्रक्रिया में “संवत्सर” तत्त्व का प्रजापति के रूप में प्रामाणिक तथा वैज्ञानिक विवेचन किया गया है। यद्यपि वैदिक साहित्य में प्रजापति को प्राण, यज्ञ, अग्नि आदि का प्रतिरूप बताया गया है किन्तु सर्वाधिक स्पष्ट स्वरूप संवत्सर के रूप में उद्भासित होता है। प्रजापति का संवत्सर के रूप ग्रहण करने की एक विशिष्ट प्रक्रिया रही है जिसके विवेचन से पूर्व “संवत्सर” पद की व्याख्या अपेक्षित है। विभिन्न ग्रन्थों में संवत्सर की पृथक्—पृथक् परिभाषा उपलब्ध होती है —

ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Fine Arts

1. शतपथ ब्राह्मण में सर्वप्रथम "संवत्सर" के वैज्ञानिक स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि "सर्वत्सरो ह वै नामैतद यत् संवत्सरः" अर्थात् समस्त भौतिक–अभौतिक सृष्टि में समान रूप से गति करने वाला तत्त्व "संवत्सर" है सर्व+सरः। यह प्रजापति देव भी सभी भौतिक–अभौतिक पदार्थों के स्वरूप को यथावत् बनाने तथा उत्पन्न करने के कारण सभी ओर गति करता हुआ संवत्सर कहलाता है।
2. महर्षि यास्क ने और अधिक स्पष्ट व्याख्या करते हुए लिखा है कि "संवसन्तेस्मिन् भूतानि"[2]अर्थात जिस तत्त्व में सभी पदार्थों की उत्पत्ति, स्थिति, लय की प्रक्रिया विद्यमान है, वह संवत्सर है। प्रजा का स्वामी प्रजापति समस्त जीवों, पदार्थों के लिए काल–खण्डों के रूप में उपस्थित होता हुआ "संवत्सर" कहलाता है। इस प्रजापति संवत्सर में ही सभी प्राणी निवास करते हैं।
3. श्री राजवीर शास्त्री के अनुसार "संवत्सरः क्षणादि लक्षणः काल"[3] अर्थात् संवत्सर क्षण, पल, मुहूर्त, घटि, अंश, राशि, दिन, रात्रि, पक्ष, माह, वर्ष आदि लक्षण वाला है। शतपथ ब्राह्मण में 'संवत्सर प्रजापति' का सर्वाधिक स्पष्ट विवेचन इस काल–खण्ड की परिभाषा के रूप में हुआ है।

अतः संवत्सर क्षणादि काल का लक्षण अर्थात् प्रतीक है। काल एक घटना–चक्र–प्रवाह है। सृष्टि की उत्पत्ति तभी होती है जब घटना चक्र घूमने लगता है अतः काल अर्थात् संवत्सर में ही सृष्टि का वास है। इसीलिए यास्क कहते हैं "संवसन्ते अस्मिन् भूतानि" इस काल के गाल में (प्रलय में) सब कुछ समा जाता है। अतः शतपथकार ने कहा "सर्वम् अत्सारिषम्" अर्थात् यह संवत्सर रूप काल सब कुछ लील जाता है अतः इसे सर्वेत्सर कहते हैं और "परोक्षप्रिया हि देवाः प्रत्यक्षद्विष" सूत्रानुसार सर्वत्सर को ही परोक्ष रूप में संवत्सर कहा जाने लगा। हलायुधकार का कहना है "क्योंकि इसमें ऋतुये बसती हैं अतः यह संवत्सर कहलाता है।"

संवत्सर अर्थात् काल का अधिपति 'संवत्सर–प्रजापति' है। ऋग्वेद में कहा गया है कि "न मृत्युरासीदमृतं न तर्हि न रान्र्या अहन् आसीत् प्रकेतः"[4] तथा **"तम आसीत् तमसा**

ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Fine Arts

गूढहमग्रे”[5]। अग्रे अर्थात अचर निरपेक्ष अवस्था में न जीवन था न मृत्यु, न रात था न दिन। भौतिक कार्यजगत् अपनी भौतिकी कारणावस्था से आच्छादित था। तदनन्तर एक घटना घटी। आपः अर्थात् अदिति की गोद में हिरण्यगर्भ प्रवाहित हुआ। यही से संवत्सर प्रजापति का उदय होता है। प्राकृतिक कणों के सागर में गत्यात्मक प्राकृतिक बहाव की शुरूआत से शून्यता समाप्त हुई। काल रूपी शाश्वत स्वयंभू तत्त्व नित्य है, असीम है। प्रवाह की अपेक्षा से काल नित्य ही है अतः काल चक्र कहा जाता है। काल–चक्र–नेमि का विवर्तन ही चक्रीय क्रिया का होना है। शतपथ में कहा गया है कि पहले कुम्भकार के चक्र के समान लोक चलायमान थे। प्रजापति ने उन्हें प्रतिष्ठित किया। संवत्सर भर में पुरुष की उत्पत्ति से अर्थ है – प्रथम काल जन्य घटिति रूप प्रजापति, किन्तु यह प्रतिष्ठा रहित था। प्रतिष्ठा का रूढ़ अर्थ लेने पर हास्यास्पद स्थिति बन जाती है। डॉ. उर्मिला देवी शर्मा[6] के अनुसार यहाँ प्रतिष्ठा से रहित होने का अर्थ सृष्टि रचना क्रिया में स्थूल क्रियात्मक घटकों से रहित होना है। ये क्रियात्मक घटक हैं पंचभूत तथा दिक और काल। प्रजापति को क्रियाहीनता की अवस्था से क्रियात्मकता की स्थिति में लाने वाला “संवत्सर” है अतः संवत्सर तथा प्रजापति पर्याय बन जाते हैं।

संवत्सर – प्रजापति की प्रतिमा

शतपथ ब्राह्मण में अनेक स्थलों पर प्रजापति और संवत्सर को समीक्रत करते हुए कहा गया है कि “संवत्सरो वै प्रजापतिः”[7] अर्थात् प्रजापति संवत्सर रूप है। शतपथकार स्वयं कहता भी है कि संवत्सर अर्थात् काल प्रजापति की प्रतिमा है। संवत्सर में चार अक्षर हैं, प्रजापति में भी चार अक्षर हैं, इसलिए संवत्सर प्रजापति की प्रतिमा है –

“तस्मादाहुः प्रजापतिः संवत्सर इत्यात्मनो हि एतंप्रतिमामसृजत यद्देव चतुरक्षरः संवत्सरः चतुरक्षरःप्रजापति तेनो हैवास्यैष प्रतिमा”।[8]

“परोक्षप्रिया हि देवाः प्रत्यक्षद्विषः” नीहारावृत न्याय के अनुसार “सर्वम् अत्सारिष्म्” निर्वचन से निष्पन्न सर्वत्सर शब्द संवत्सर बन गया। इस संदर्भ में पं. मोतीलाल जी शास्त्री की व्याख्या प्रशंसनीय है। काल–चक्र अपने त्सरणात्मक अर्थात् कुटिल भाव से वक्रित है। यह वक्रता ही

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Fine Arts

सौर–काल को चक्रात्मक वृत्त को मास, ऋतु आदि में विभाजित करने वाला सप्तरश्मि सूर्य है तथा ये सृजन रश्मियाँ कुटिल अर्थात् तिर्यक हैं –

"तिरश्चीनो विततो रश्मिरेषामधः स्विदासीत् उपरि स्विदासीत्"।[9]

प्रजापति संवत्सर रूप है। इसके दोनों पुत्र देव तथा असुर मास के दोनों पक्षों क्रमशः शुक्ल पक्ष व कृष्ण पक्ष के प्रतीक है यथा –

देवाश्च वा असुराश्च। प्राजापत्याः प्रजापतेः पितुः
दायमुपेयुरेतावेवार्धमासौ य एवापूर्यते तं देवा उपायन्ययोऽपक्षीयते तमसुराः।[10]

वस्तुतः संवत्सर अर्थात् काल के असंख्य घटक ही प्रजापति के अडग है। सृष्टि–सर्जना में काल की उत्पतित्त हिरण्यगर्भ के रूप में सर्वप्रथम हुई थी। ऋग्वेद भी इस तथ्य को प्रतिपादक है –

"हिरण्यगर्भ समवर्तताग्रे भूतस्य जात पतिरेक आसीत।
स दाधार पृथिवीमुतद्यां कस्मै देवाय हविषा विधेम।"[11]

अतः संवत्सर प्रजापति का प्रथम पुत्र है और वह उसकी प्रतिमा सदृश है। दार्शनिक भी कहते हैं कि "पुत्रो वै आत्मा"। अतः संवत्सर प्रजापति की आत्मा है।

संवत्सर प्रजापति का अन्तक रूप :–

शतपथ ब्राह्मण में अग्निचयन के प्रसंग में संवत्सर प्रजापति को "अन्तक" विशेषण से युक्त किया गया है – "एतमेव तदन्तकं मृत्युं संवत्सरं प्रजापतिम्"।[12] वस्तुतःजीवन–मृत्यु एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जो उत्पन्न होता है उसकी मृत्यु भी अवश्यंभावी है। प्रजापति संवत्सर उत्पत्तिकर्त्ता पिता है तो मर्त्यरूप भी यही है। इसीलिए शतपथ में संवत्सर को मृत्यु कहा गया है क्योंकि यह दिन–रात के माध्यम से मर्त्यो की आयु को क्षीण करता है। मृत्यु जीवन का परिणाम है–

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Fine Arts

"एष वै मृत्युः यत् संवत्सरः। एष हि मर्त्यानाम् अहोरात्राभ्यामायुः क्षिणोत्यथ म्रियन्ते तस्मादेष एवं मृत्युः।"[13]

अन्तक का अर्थ है "अन्त करने वाला"। काल ही जीवन को अन्तिम किराने अर्थात् मृत्यु तक पहुँचाता है अतः इसे "अन्तक" कहना उचित है। इस प्रकार शतपथ में प्रजापति के स्रष्टा एवं धाता रूप के साथ–साथ उसके अन्तक तथा मृत्यु रूप को भी बताकर संवत्सर प्रजापति के सर्वाङ्गीण स्वरूप को प्रस्तुत किया गया है।

संवत्सर प्रजापति का संख्यात्मक स्वरूप :–

संवत्सर का सम्बन्ध काल से है। एक दृष्टि से काल संवत्सर का ही पर्याय है तथा काल गणना पर आधारित है। काल के विभिन्न घटक यथा वर्ष, पक्ष, सप्ताह, दिन आदि है। संवत्सर काल के ये घटक जीवनयात्रा के अपरिहार्य अंग है क्योंकि इनके बिना भूत, भविष्य तथा वर्तमान का विभाजन भी नहीं हो सकता। प्रजापति संवत्सर है। शतपथ ब्राह्मण में संवत्सर प्रजापति के विषय में अनेक संख्यात्मक निर्देश मिलते हैं जो इसके विभिन्न कालजन्य अंगों के द्योतक हैं। संवत्सर प्रजापति सम्बन्धी विभिन्न संख्यात्मक निर्देश निम्नलिखित हैं –

(1) शतपथ ब्राह्मण में प्रजापति पंच संख्या से समन्वित दिखाई देता है। पंच संख्या वस्तुतः संवत्सर की पाँच ऋतुओं की द्योतक है।[14]

(2) द्वादश संख्या का प्रयोग संवत्सर के द्वादश मासों के लिए किया गया है।[15]

"द्वादश वै मासा संवत्सरस्य संवत्सरः प्रजापतिः"।

(3) संवत्सर प्रजापति पंचदश संख्या से सम्बद्ध भी दृष्टिगत होता है। एक माह में दो पक्ष होते है तथा प्रत्येक पक्ष में 15 दिन तथा 15 रातें। संवत्सर अर्थात् काल प्रजापति मानो एक विहग है जो अपने इन दोनों पक्षों से उड़ा जा रहा है। इसलिए वह पंचदश प्रजापति है।[16]

(4) संवत्सर के बारह मासों और पाँच ऋतुओं के आधार पर संवत्सर रूपात्मक प्रजापति को 'सप्तदश' उपाधियुक्त किया गया है –"सप्तदशो वे संवत्सर प्रजापति"।[17]

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Fine Arts

(5) एकविंशप्रजापति से अभिप्राय बारह मास, पाँच ऋतु, तीन लोक और आदित्य से है। "द्वादश मासाः पञ्चर्तवस्त्रय इमे लोका असौ आदित्य एकविंश एष प्रजापतिः"।[18]

(6) प्रजापति के लिए प्रयुक्त चतुर्विंश संख्या वर्ष के 24 अर्धमासों की प्रतीक है **"चतुर्विंशतिर्वै संवत्सरस्याअर्धमासाः। संवत्सरः प्रजापति"।**[19]

(7) इसी भांति प्रजापति के लिए प्रयुक्त 360 संख्या[20] वर्ष के 360 दिनों, 720 संख्या[21] वर्ष के अहोरात्रों (360 दिन+360 रात), 10800 संख्या[22] वर्ष के मुहूर्तो की प्रतीक हैं। इसके अतिरिक्त सप्तपुरुष प्रजापति, षोडशकल प्रजापति आदि उल्लेख भी मिलते हैं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि प्रजापति इस मुखर सृष्टि का मौन कारण है। उनके मौन रूप को मुखर बनाने वाली अनन्त किरणें है जो सूर्य में आबद्ध हैं। सांवत्सरिक सूर्य इस जड़–जंगम जगत् की आत्मा है "सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च" और यही मृत्यु है। देव–विकास–क्रम में सूर्य ही प्रजापति हो गया।

सन्दर्भ :

1. अथर्ववेद : 19.53.1
2. निरुक्तम् : 4.4
3. राजवीर शास्त्री : वैदिक कोश
4. ऋग्वेद : 10.129.2
5. ऋग्वेद : 10.129.3
6. राजस्थान वैदिक शोध संस्थान, जयपुर में आयोजित "ज्ञान–सत्र" (19.9.1990) में डॉ. उर्मिला देवी शर्मा द्वारा पठित लेख "शतपथ ब्राह्मण में सृष्टि विज्ञान" से उद्धृत।
7. शतपथ ब्राह्मण : 3.2.2.4; 5.1.2.9; 5.1.3.2
8. शतपथ ब्राह्मण : 11.1.6.13
9. ऋग्वेद : 10.129.5
10. शतपथ ब्राह्मण : 1.7.2.22
11. ऋग्वेद : 10.121.1

ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Fine Arts

12. शत. ब्रा. : 10.4.3.11

13. शत. ब्रा. : 10.4.3.1

14. शत. ब्रा. : 6.1.2.18

15. शत. ब्रा. : 5.4.5.20

16. शत. ब्रा. : 13.2.5.1

17. शतपथ ब्राह्मण : 8.4.3.20

18. शत. ब्रा. : 6.2.2.3

19. शत. ब्रा. : 4.6.1.12

20. शत. ब्रा. : 10.4.3.8; 10.4.3.13; 10.4.3.19

21. शत. ब्रा. : 10.4.2.2; 10.4.2.4

22. शत. ब्रा. : 10.4.2.20; 10.4.2.23; 10.4.2.24

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, hereby, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website/amendments /updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally I have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and the entire content is genuinely mine. If any issue arise related to Plagiarism / Guide Name / Educational Qualification / Designation/Address of my university/college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission / Submission /Copyright / Patent/ Submission for any higher degree or Job/ Primary Data/ Secondary Data Issues, I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the

ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Fine Arts

data base due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Aadhar/Driving License/Any Identity Proof and Address Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper may be rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper may be removed from the website or the watermark of remark/actuality may be mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me.

अर्चना भार्गव